इकाई

1 प्रकृति व पर्यावरण

आपने पाठ्यपुस्तक में 'प्रकृति व पर्यावरण' की इकाई का अध्ययन किया था। इस इकाई में कोशिश की गई थी कि हम पर्यावरण के संरक्षण की दिशा में सोचना शुरू करें और उस क्षेत्र में अपनी भूमिका भी सुनिश्चित करें। इस वर्ष 'प्रकृति व पर्यावरण' में सम्मिलित अध्यायों का प्रमुख उद्देश्य प्रकृति के सौन्दर्य की सराहना व सौन्दर्य बोध विकसित करना है।

चंद्रगहना से लौटती बेर कविता में कवि ने चंद्रगहना नामक स्थान से लौटते समय खेतों में चना, सरसों व अलसी की लहलहाती फसल व आस–पास की प्राकृतिक सुंदरता पर मुग्ध होकर उसका वर्णन किया है। इस वर्णन की खासियत यह है कि इसमें प्राकृतिक दृश्य का मानवीकरण हुआ है। जन साधारण के जीवन की गहरी और व्यापक संवेदना उनकी कविताओं में मुखरित हुआ है। मिट्टी की सुगंध व मिट्टी के प्रति अस्था के स्वर कविता में यत्र–तत्र बिखरे पड़े हैं।

नर्मदा का उद्गम : अमरकण्टक हमें छत्तीसगढ़–मध्य प्रदेश के सीमावर्ती इलाके में फैले सतपुड़ा–विन्ध्य के पर्वत प्रदेश में ले जाता है। लेख में नर्मदा के उद्गम क्षेत्र व उससे जुड़ी दन्त कथा को बड़ी खूबसूरती के साथ सहज भाषा में पिरोया गया है।

प्रकृति के प्रति नागार्जुन के हृदय में विशेष आकर्षण विद्यमान था। **बादल को घिरते देखा है** कविता में उन्होंने प्रकृति के अनुपम सौन्दर्य का वर्णन किया है। बादल का घिरना, प्रवासी पक्षियों का आगमन, कीड़े–मकोड़े चुनते हंस आदि के माध्यम से प्रकृति का सूक्ष्म चित्रण इस कविता में हुआ है।

●●●